हिन्दी कथारचना

विषय : मुझेभी है एक सपना

मेरी, उसकी, हमारी सपना

"सपना सब दिखता है। सोने पर दिखना सपना है पर असली सपना वह है जो हमें सोने नहीं देते।" यह मैंने नहीं कहा बल्कि हमारे प्रथम राष्ट्रपति अब्दुल कलाम ने कहा। सपने हर व्यक्ति देखते है। और उसे प्राप्त करने की कोशिश भी करते है। ऐसा लोगों के बारे में हम हर दिन सुनते है। पर समूह में ऐसा भी लोग है जो बहुत अच्छी सपने दिखते है, उसे प्राप्त करने की कोशिश करते है पर अपने सपनों के जैसे बन नहीं पाते है।" इसे बोलते ही माँ के आँखों आँखें भरने लगे। यह देखकर मुझे पता चला की माँ अपने पुरानी यादों में खो गया है। मैं धीरे वहाँ से उठकर अपने कमरे चला। अगर मैं कुछ देर और वहा बैठे तो माँ पुराने यादों की सोच-

सोच में दुखी पड़ जाएगा। मेरी वहाँ से जाने पर माँ भी सोने की तैयारी करके सोने गया। कुछ देर देर होने पर माँ सो गया। पर मुझे सोना नहीं आया। मेरे मन में अपनी माँ की कहानी याद आया, जो वह वे मुझसे कहते थे अपने बारे में। माँ बचपने बचपन से ही बहुत सपने अपने मन में रखने वाली थी। अपनी सपनों को प्राप्त करने केलिए अच्छी तरह पढ़ती भी थी पर स्कूल की पढ़ाई की बाद वह जिस मार्ग चुना बाद की पढ़ाई केलिए वह गलत थी। इसलिए वह अपनी सपना नहीं प्राप्त कर सका। ऐसे जीवन वाली नदी से तैर करते वक्त एक जगह थानी एक नदीतट पहुँचने पर उसे समझ आया की अगर वे ऐसे ही चलेंगे तो अपना सपना प्राप्त नहीं कर सकेंगा सकेगा। ऐसा समझने पर भी वह अपनी सपने को दूर नहीं फेंका। उसी मार्ग से चलकर सपने को प्राप्त करने की कोशिश किया। दिन-रात उसकी ही परिश्रम किया। बहुत त्याग किया। छोटे-छोटे अभिलाषों को एक जगह रखकर वह अपनी सपने की पीछे दौड़ा।

बहुत परिश्रम किया एक के बाद एक की तरह हर परीक्षा लिखा पर एक सरकारी टीचर यानी सरकारी स्कूल के अध्यापिका बनने की अभिलाषा नहीं प्राप्त किया। अब आप सोचे होंगे की यह हर व्यक्ति को होते है वह उसकी आखिरी अवसर थी उसमें भी सपना नहीं पा सका। उसे वह अध्यापिका नहीं बन सका सिर्फ एक स्थान पीछे होने पर। अगर वह एक स्थान आगे था तो वे अपना सपना प्राप्त कर सकती थी। "क्या करें भगवान मैं ऐसा होना चाहते है तो ऐसा ऐसे ही होते है।" ऐसा कहकर माँ सब भूलने की कोशिश करते है पर मुझे पता है माँ सब भूल नहीं सकेगा। क्योंकि उसकी गहरी सपना था अध्यापिका बनना। क्या एक व्यक्ति अपने दिल से चाहने वाले बातें या अभिलाषा भूल सकते है? नहीं. एक चोट की जैसे अपनी सपने पूरे न होने क तरह अपना सपना पूरा न होने के दुःख उसके दिल में रहेगे। पर अपनी सपना पूरे होकर एक अध्यापिका बनकर, बच्चों को पढ़ाकर एक समूह में कमाने वाले औरत नहीं बन पायी मेरी माँ। पर समूह उसे सिर्फ घर में

63rd Kerala School Kalolsavam - Jan 04 To 08, 2025 - Thiruvananthapuram

63-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം 2025 ജനുവരി 4 മുതൽ 8 വരെ തിരുവനന്തപുരം

Item Code: 642 Participant Code: 330

रहने वाले एक औरत की तरह देखते है। पर मेरी माँ मेरेलिए भगवान है, जो मुझे सही रास्ता दिखाते है वह मेरी माँ है। सही रास्ता न चुनने पर मेरी माँ अध्यापिका नहीं बन पाया। इसके कारण लोग सोचते है कि मेरी माँ सही रास्ता नहीं दिखा सकेगा। पर सच असल में जो व्यक्ति एक गलती किया और उसे समझा, दूसरी बार उसी गलती करने की कोशिश नहीं करेगी। अब मेरी माँ की सपनों में मैं है। वह मुझे एक अध्यापिका बनकर देखना चाहते है। इसकेलिए कोई कुछ कहे माँ नहीं सुनते बस मुझे ऐसा दिखने केलिए परिश्रम करते है। एक अच्छी अध्यापिका बनाने केलिए दिन-रात परिश्रम करते है। वह मुझे सीखाते भी है। अब मुझे भी है एक सपना अपनी माँ की सपना प्राप्त करना और उसे खुश रखना। मैं उस सपना प्राप्त करने केलिए अच्छी तरह परिश्रम करेगा। मैं अपने माँ से वादा किया कि मैं एक अध्यापिका ज़रूर बनेगा। यही है मेरी सपना।... नहीं, हमारी सपना।...

मेरी माँ ने अपने जीवन द्वारा मुझे सिखाया सिर्फ सपना होने से कुछ नहीं होगा। उसके लिए परिश्रम करना है और सही रास्ता चुनना है। न पढ़ने से नहीं न अच्छी तरह सोचने से मेरे माँ की सपना पूरा न हुआ। माँ अपनी आग्रह पूरा नहीं कर सका पर उस सपनों के द्वारा मुझे एक पाठ पढ़ा। अध्यापिका बनने की अभिलाषा दूर चला पर अभी भी एक सपना बाकी है उसकी मन में। और उसी सपना अगर पूरा होना है तो सिर्फ उसको परिश्रम नहीं मेरी परिश्रम भी होना है। वह हर रोज़ मुझसे कहते हैं जो अभिलाषा या सपना तुम्हारे मन में है वह तुम्हारी या मेरी नहीं हमारी सपना है। हमारी सपने की पीछे तुम अकेले नहीं मैं भी दौड़ रहा हूँ तुम्हारी साथ, तुम्हारी छाया की तरह तरह।